जून: 2025

वर्ष : 8 अंक : 9

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"'विकसित कृषि संकल्प अभियान' कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने की एक बड़ी पहल है – श्री चौहान

संस्थान का मासिक समाचार, जून 2025 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

जून के महीना कई महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को लेकर आता है जैसे, विश्व पर्यावरण दिवस तथा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आदि। जून को स्वास्थ्य जागरूकता माह के रूप में भी जाना जाता है क्योंकि इस महीने हम प्रति वर्ष 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाते हैं, जिसका उद्देश्य दुनिया भर में योगाभ्यास के लाभ के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने का कारण यह है कि इस दिन ग्रीष्म संक्रांति होती है और यह भारत में दिन के उजाले की सबसे लंबी अवधि वाला दिन होता है। "॥आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्॥" अर्थात स्वास्थ्य हमारी सबसे बड़ी पूंजी है।

इस वर्ष 29 मई से 12 जून तक केन्द्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के माध्यम से देश भर के किसानों से जुड़ना है। आजादी के बाद पहली बार सरकार किसानों से सीधे जुड़ने की बड़ी पहल कर रही है। इस अभियान में लगभग 1.5 करोड़ (15 मिलियन) किसानों से सीधे संपर्क किये जाने की संकल्पना की जा रही है।

इस राष्ट्रव्यापी अभियान का औपचारिक शुभारंभ 29 मई को ओडिशा की पावन धरती, पुरी धाम से की जाएगी। इस अभियान का उद्देश्य देश भर के 1.5 करोड़ (15 मिलियन) किसानों तक पहुंचना और उनसे सीधे संवाद करना है।

आइए हम सब मिलकर इस पावन आभियान में अधिक से अधिक योगदान करें।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

बिहार के दरभंगा जिले के मछुआरों का ज्ञान और कौशल विकास पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

दरभंगा जिला जल संसाधनों से समृद्ध मे मिथिला क्षेत्र में आता है जिसका ऐतिहासिक महत्व है। यह जिला तालाबों/टैंकों, बाढ़ के मैदानों (आर्द्रभूमि) और कई बारहमासी और मौसमी नदियों के विशाल जलीय संसाधनों से संपन्न है। ये जल निकाय मछुआरा समुदाय के साथ-साथ ग्रामीण आबादी के लिए आजीविका के प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करते हैं। दरभंगा जिले में मीठे पानी की मछलियों की एक बड़ी विविधता पाई जाती है। हालाँकि, भारतीय प्रमुख कार्प अपने व्यावसायिक महत्व के लिए अधिकतम योगदान देते हैं। अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र के महत्व को समझते हुए, मछुआरों की आय को दोगुना करने की दिशा में एक मिशन के साथ कौशल विकास और क्षमता निर्माण कार्यक्रम के एक भाग के रूप में 29 अप्रैल से 5 मई, 2025 के दौरान बिहार के दरभंगा जिले के मछुआरों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में कुल 30 मछुआरों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए, संस्थान के

निदेशक डॉ बि के दास ने अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर मछुआरों के कौशल विकास पर जोर दिया ताकि उनकी स्थायी आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। उन्होंने मछुआरों से वैज्ञानिक ज्ञान और अनुप्रयोगों को प्राप्त करके इष्टतम उत्पादन और उत्पादकता के लिए उपलब्ध संसाधनों का पता लगाने का भी आग्रह किया। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के दौरान, किसानों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं जैसे प्रेरित प्रजनन, समग्र मछली संस्कृति, नर्सरी प्रबंधन, मछली रोग प्रबंधन, फ़ीड प्रबंधन, प्राकृतिक मछली खाद्य जीव, जल गुणवत्ता प्रबंधन, सजावटी मछली संस्कृति आदि पर प्रशिक्षित किया गया है। इसके अलावा, किसानों को क्षेत्र के दौरे से अवगत कराया गया, जिसमें शामिल थे: हलिसहर मछली बीज फार्म, सजावटी मछली बाजार, पूर्वी कोलकाता वेटलैंड्स (ईकेडब्ल्यू), आईसीएआर-सीआईएफई कोलकाता केंद्र, आईसीएआर-सीआईएफए कल्याणी मछली फार्म सभी प्रतिभागियों ने अपनी संतुष्टि व्यक्त की और यह भी स्वीकार किया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम ने वास्तव में उनके ज्ञान को बढ़ाने में मदद की है जिसे वे अपने संबंधित जल संसाधनों में लागू कर सकते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में आयोजित और डॉ. अपर्णा रॉय और डॉ. अजय साहा द्वारा समन्वयित किया गया, जिसमें श्री सुजीत चौधरी, श्री मनबेंद्र रॉय, डॉ. अविषेक साहा और श्री पंकज कुमार ने तकनीकी सहयोग किया।

संस्थान ने मेघालय के स्कूलों में अंतर्स्थलीय शौकिया मत्स्य पालन (ऑर्नामेंटल फिशरीज) को लोकप्रिय बनाया

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने मेघालय सरकार के मत्स्य विभाग (DoF) के सहयोग से मेघालय के स्कूलों में अंतर्स्थलीय शौकिया मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक "जागरूकता सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम" का आयोजन 8 मई 2025 को मेघालय राज्य मत्स्य अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (MSFR & TI), मावपुन, मेघालय में किया। यह कार्यक्रम संस्थान के NEH घटक के अंतर्गत विशेष रूप से स्कूली बच्चों के लाभ हेतु आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सिफरी , बैरकपुर; श्रीमती आइतिनोलिन एल. मावलोंग, एमसीएस, निदेशक, मत्स्य विभाग, मेघालय सरकार; और डॉ. एस. के. माझी, प्रमुख, आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। समन्वयन का कार्य डॉ. प्रोनोब दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. एस. बोरा, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सिफरी और श्री प्रेशियस एस. सूतिंग, प्राचार्य, MSFR & TI, मावपुन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में श्रीमती मेदा ए. खोंगजिलियू, अधीक्षक मत्स्य, री-भोई जिला और श्री पायोनियर्स लिंगदोह, प्रभारी अधीक्षक मत्स्य, ईस्ट खासी हिल्स जिला (मत्स्य विभाग, मेघालय) ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम में लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें स्कूल शिक्षक, मत्स्य अधिकारी, वैज्ञानिक, तकनीकी अधिकारी और मीडिया प्रतिनिधि शामिल थे। उद्घाटन सत्र में डॉ. प्रोनोब दास ने सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम के उद्देश्य को स्पष्ट किया। उन्होंने उपस्थित स्कूल प्रतिनिधियों को आईसीएआर-सिफरी की कार्यप्रणाली का संक्षिप्त परिचय भी दिया। डॉ. एस. के. माझी ने मेघालय में मत्स्य क्षेत्र के विकास हेतु संस्थान द्वारा वर्षों से किए जा रहे अनुसंधान और विस्तार कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने मेघालय की समृद्ध मछली जैव विविधता और राज्य में शौकिया मत्स्य पालन की संभावनाओं पर भी प्रकाश डाला।

श्री पी. लिंगदोह ने राज्य के स्कूलों में शौकिया मत्स्य पालन को लोकप्रिय बनाने के लिए आईसीएआर-सिफरी के प्रयासों की सराहना की। डॉ. एस. बोरा ने स्कूल शिक्षकों से आग्रह किया कि वे छात्रों को एक्वेरियम में मछली पालन के महत्व के बारे में शिक्षित करें और छात्रों को आईसीएआर-सिफरी के भ्रमण पर लाने को प्रेरित करें। दो शिक्षकों ने भी अपने विचार साझा करते हुए आईसीएआर-सिफरी और मत्स्य विभाग का आभार व्यक्त किया तथा एक्वेरियम की उचित देखरेख का आश्वासन दिया।

श्रीमती एम. ए. खोंगजिलियू ने राज्य में मत्स्य पालन के विकास हेतु निरंतर सहयोग देने के लिए आईसीएआर-सिफरी का धन्यवाद किया और बताया कि इससे मछुआरों की आजीविका को बल मिला है। उन्होंने राज्य की स्थानीय देशी शौकिया मछली प्रजातियों के महत्व को रेखांकित किया और विभाग की ओर से स्कूलों

को आवश्यक सहायता देने का आश्वासन भी दिया। उद्घाटन सत्र का समापन श्री पी. एस. सूतिंग द्वारा औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।तकनीकी सत्र के दौरान, डॉ. प्रोनोब दास ने शौकिया मत्स्य पालन और एक्वेरियम मछली पालन के महत्व को समझाया। डॉ. एस. बोरा ने एक्वेरियम प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं जैसे स्थापना और रखरखाव पर प्रकाश डाला। श्री ए. ककाटी, तकनीकी अधिकारी, आईसीएआर-सिफरी तथा भुवनेश्वर स्थित एम. आर. अक्वाटेक के तकनीशियनों ने एक्वेरियम स्थापना का प्रदर्शन किया।

इंटरएक्टिव सत्र में वैज्ञानिकों, मत्स्य अधिकारियों और तकनीकी विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों के शौकिया मत्स्य पालन से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दिए। उन्होंने स्कूल शिक्षकों से आग्रह किया कि वे छात्रों में एक्वेरियम मत्स्य पालन के लिये प्रोत्साहित करें। कार्यक्रम का समापन छात्रों के लाभ के लिए मेघालय के री-भोई और पूर्वी खासी हिल्स जिलों का प्रतिनिधित्व करने वाले 50 स्कूलों के बीच सहायक 50 एक्वेरियम,उसके सहायक उपकरण और मछलियों के वितरण के साथ हुआ।

संस्थान ने अकईपुर आद्रक्षेत्र सतत मत्स्य पालन को बढ़ावा देने के लिए मत्स्य प्रग्रहण मेला आयोजित किया

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) ने 7 मई 2025 को उत्तर 24 परगना के अकईपुर आद्रक्षेत्र में एक मत्स्य प्रग्रहण मेला सह जागरूकता कार्यक्रम का सफल आयोजन किया। यह पहल आद्रक्षेत्र मत्स्य पालन से जुड़ी एक अहम चुनौती — गुणवत्ता वाले और बड़े आकार के मछली बीज (फिश सीड) की सीमित उपलब्धता — को संबोधित करने के लिए की गई थी, जो मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए आवश्यक है।

इस समस्या से निपटने के लिए ICAR-CIFRI ने अकईपुर आद्रक्षेत्र के सतत विकास हेतु नवोन्मेषी उपायों को अपनाया है। कार्यक्रम के दौरान एक प्रमुख तकनीक पेन एनक्लोजर में स्थानीय स्तर पर मछली बीज उत्पादन (इन-सीटू सीड रेज़िंग) का प्रदर्शन किया गया। यह तकनीक न केवल उच्च गुणवत्ता वाले फिश सीड की उपलब्धता सुनिश्चित करती है, बल्कि कल्चर-आधारित मात्स्यिकी (CBF) पद्धतियों को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय मछली उत्पादन को भी बढ़ाती है। इस पहल के तहत ICAR-CIFRI ने पेन कल्चर और CBF तकनीकों के प्रदर्शन को सहयोग देने के लिए कई मत्स्य उपकरण जैसे CIFRI एचडीपीई पेन, एफआरपी नाव, ICAR-CIFRI कैज ग्रो फीड और गुणवत्ता युक्त मछली बीज वितरित किये। लाबेओ रोहिटा, लाबेओ कतला और लाबेओ बाटा जैसी देशी मछली प्रजातियों के कुल 150 किलोग्राम फिश सीड को वैज्ञानिकों और परियोजना कर्मियों की देखरेख में सह-प्रबंधन मॉडल के तहत पेन एनक्लोजर में डाला गया। यह कार्य ICAR-CIFRI के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में किया गया।

इस आयोजन में एक जागरूकता सत्र भी शामिल था, जिसमें ICAR-CIFRI की वैज्ञानिक टीम ने वेटलैंड संरक्षण, सतत मछली पालन पद्धतियों, और अति-शिकार व प्रदूषण के दुष्प्रभावों पर प्रकाश डाला। 50 से अधिक उत्साही मछुआरों ने सक्रिय रूप से भाग लिया, फील्ड प्रदर्शन और चर्चाओं में वैज्ञानिकों और तकनीकी कर्मचारियों के साथ संवाद किया। स्थानीय मछुआरों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि ICAR-CIFRI के प्रयासों ने उनकी आजीविका में कैसे सकारात्मक बदलाव लाया है।

गंगा का पुनर्जीवन: बेलूर में 2.2 लाख मछलियों के बच्चों का नदी में छोड़ा जाना – मछली जैव विविधता की बहाली

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी), बैरकपुर, नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत गंगा नदी के संरक्षण और पुनर्जीवन के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। राष्ट्रीय रिवर रैंचिंग कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गंगा में घटती मछली आबादी की भरपाई करना और जलीय जैव विविधता को पुनः स्थापित करना है। 9 मई, 2025 को, आईसीएआर-सिफरी और रामकृष्ण मठ-मिशन, बेलूर ने मिलकर बेलूर घाट पर एक रिवर रैंचिंग कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर भारतीय प्रमुख कार्प प्रजातियों (IMCs) — रोहू (Labeo rohita), कतला (Labeo catla), मृगाल (Cirrhinus mrigala) — की 2.16 लाख उन्नत फिंगरलिंग्स (छोटी मछलियाँ) को गंगा नदी में छोड़ा गया।

इस कार्यक्रम को बेलूर मठ के महासचिव स्वामी सुविरानंदजी महाराज और RKMVERI के उपाध्यक्ष स्वामी शिवपूर्णानंदजी महाराज की पावन उपस्थिति से विशेष गरिमा प्राप्त हुई। उन्होंने नदी की स्वच्छता और सतत मछली पकड़ने की प्रथाओं के महत्व पर बल दिया। इस शुभ अवसर पर सचिव महाराज ने पाकिस्तान की बर्बरता के

खिलाफ भारत की कार्रवाई का समर्थन व्यक्त किया और सभी देशवासियों से एकजुट रहने व सरकार के साथ खड़े रहने की अपील की।

कार्यक्रम में 63 स्थानीय मछुआरों ने भाग लिया और उन्होंने आईसीएआर-सिफरी प्रतिनिधियों के साथ जैव विविधता संरक्षण, सतत मछली पकड़ने की तकनीकें और नदी की स्वास्थ्य पर चर्चा की। यह कार्यक्रम पर्यावरणीय स्थिरता को भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा विशेष रूप से बेलूर मठ जैसे पवित्र स्थल से जोड़ने का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने कहा, "गंगा नदी के स्वास्थ्य में निरंतर गिरावट एक गंभीर चिंता का विषय है। मछली भंडार को बेहतर करने के लिए सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करना आवश्यक है, जिससे भविष्य में मत्स्य उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा।"

बेलूर मठ में आयोजित राष्ट्रीय रिवर रैंचिंग कार्यक्रम – चरण III – गंगा नदी के पुनर्जीवन के लिए एकीकृत संरक्षण प्रयासों की आवश्यकता को उजागर करता है। वैज्ञानिक उपलब्धियों और पारंपरिक मूल्यों के समन्वय से संचालित ऐसे प्रयास पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देते हैं और समुदाय को नदी से जोड़ते हैं।

मायापुर नदी में रेंचिंग: आजीविका और जैव विविधता को बनाए रखने के लिये

राष्ट्रीय पशुपालन मिशन III के अनुसार, बैरकपुर में ICAR-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने 16 मई 2025 को पश्चिम बंगाल के मायापुर में प्रभुपाद घाट पर राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) के तहत नदी में मत्स्य रेंचिग की पहल को अंजाम दिया, जो स्थायी मत्स्य पालन और नदी जैव विविधता के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाता है। नदी में रेंचिंग का प्राथमिक उद्देश्य नदी की कम होती मछली आबादी को बहाल करना, स्थानीय समुदायों के लिए मत्स्य संसाधनों को बढ़ाना और गंगा नदी प्रणाली में पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा देना है। यह पहल अंतर्स्थलीय खुले पानी के स्थायी प्रबंधन की गारंटी देने के ICAR-CIFRI के निरंतर उद्देश्य से मेल खाती है।

वर्तमान में, ICAR-CIFRI ने देश भर में विभिन्न स्थानों पर भारतीय मेजर कार्प (रोहू, कतला और मृगल) की लगभग 162 लाख मछली फिंगरलिंग वितरित की हैं। यह व्यापक फिंगरलिंग निर्वहन नदी के विभिन्न खंडों के साथ होने वाली अन्य समकक्ष पहलों का हिस्सा है, जो स्थायी मछली पकड़ने को बढ़ावा देती है। इस कार्यक्रम में भारतीय मेजर कार्प के 2.54 लाख फिंगरलिंग्स को गंगा नदी में छोड़ा गया।

कार्यक्रम में इस्कॉन, मायापुर के प्रतिनिधि श्री नंदन प्रभु जी की गरिमामयी उपस्थिति रही और इसमें महिला मछुआरों सहित 26 स्थानीय मछुआरों ने भी भाग लिया, जिन्होंने पशुपालन गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस पहल का नेतृत्व आईसीएआर-सिफरी के निदेशक और एनएमसीजी परियोजना के पीआई डॉ बसंत कुमार दास ने किया, साथ ही डॉ मितेश रामटेके, डॉ कैनसियाल जॉनसन और एनएमसीजी परियोजना टीम के अन्य समर्पित सदस्यों ने भी किया। पशुपालन कार्यक्रम के साथ-साथ, स्थानीय मछली पकड़ने वाले समुदाय को हिल्सा, डॉल्फिन और गंगा की मछली प्रजातियों के संरक्षण के महत्व के बारे में शिक्षित करने के लिए एक जागरूकता पहल लागू की गई। जलीय पारिस्थितिकी तंत्र की अखंडता को बनाए रखने के लिए लुप्तप्राय प्रजातियों की सुरक्षा और अस्थिर मछली पकड़ने की तकनीकों को कम करने पर जोर दिया गया। मछुआरों को टिकाऊ मछली पकड़ने की रणनीति को लागू करने, हानिकारक उपकरणों से बचने और प्राकृतिक प्रजनन चक्रों को सुविधाजनक बनाने के लिए बंद मौसम में मछली पकड़ने के निषेध का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। ये पहल न केवल मछुआरों की आजीविका को बनाए रखती हैं, बल्कि नदी बहाली और जैव विविधता संरक्षण के व्यापक उद्देश्यों को भी आगे बढ़ाती हैं। आईसीएआर-सिफरी वैज्ञानिक हस्तक्षेप और सामुदायिक भागीदारी द्वारा मछली आबादी की बहाली में महत्वपूर्ण बना हुआ है।

संस्थान और अरुणाचल प्रदेश के राज्य मत्स्य विभाग द्वारा स्कूलों में सजावटी मत्स्य पालन को लोकप्रिय बनाना

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्देशीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सिफरी), बैरकपुर ने मत्स्य निदेशालय, अरुणाचल प्रदेश

सरकार के सहयोग से ईटानगर के डी.के. राज्य सम्मेलन केंद्र के पारे हॉल में जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूली छात्रों के बीच सजावटी मत्स्य पालन को लोकप्रिय बनाना था, तथा मनोरंजक गतिविधि और आजीविका के साधन के रूप में इसकी क्षमता पर प्रकाश डालना था। यह कार्यक्रम आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि.के. दास, अरुणाचल प्रदेश सरकार के मत्स्य निदेशक श्री जे. ताबा और आईसीएआर-सिफरी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के प्रमुख डॉ. एस.के. माझी के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। डॉ. ए.के. यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक, और डॉ. सिमंकू बोरा, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सिफरी ने श्री तागी योंगगाम, उप निदेशक, और अन्य विभागीय अधिकारियों के सक्रिय समर्थन के साथ कार्यक्रम का समन्वय किया। स्कूल के शिक्षकों, वैज्ञानिकों, मत्स्य अधिकारियों और मीडिया के सदस्यों सहित कुल 150 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। श्री गेब्रियल डी. वांगसू, माननीय मत्स्य मंत्री, अरुणाचल प्रदेश सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने संबोधन में, उन्होंने स्कूलों को छात्रों के बीच उद्यमशीलता कौशल का पोषण करने

के लिए मत्स्य पालन-आधारित शैक्षिक मॉड्यूल को एकीकृत करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने स्थानीय जरूरतों को पूरा करने के लिए वैज्ञानिक आउटरीच को तैयार करने के लिए आईसीएआर-सिफरी की सराहना की, खासकर ऐसे समय में जब मछली पालन में रुचि कम हो रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस तरह की युवा-उन्मुख पहल मत्स्य पालन को अधिक समावेशी और प्रासंगिक बनाती हैं। इंजीनियर तालेम तबोह, माननीय विधायक और मंत्री के सलाहकार (मत्स्य पालन) ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्य किया। विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित मत्स्यपालन सचिव श्री हेज तारी ने छोटे पैमाने पर उच्च मूल्य वाली मत्स्यपालन के विकास में राज्य की क्षमता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सजावटी मछली पालन उचित प्रशिक्षण और

जुनून के साथ किए जाने पर शैक्षिक, चिकित्सीय और उद्यमशील लाभ प्रदान करता है। कार्यक्रम में उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों में मत्स्यपालन निदेशक श्री जॉयशील ताबा, उच्च और तकनीकी शिक्षा के संयुक्त निदेशक डॉ. जोरम मुथु और माध्यमिक शिक्षा के संयुक्त निदेशक श्री न्यामो रीना शामिल थे। प्रत्येक वक्ता ने मत्स्यपालन में अनुभवात्मक शिक्षा के मूल्य और कम उम्र से ही कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित किया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. सिमंकू बोरा के स्वागत भाषण से हुई, जिसके बाद डॉ. एस.के. माझी ने उद्घाटन भाषण दिया। डॉ. माझी ने अरुणाचल प्रदेश की समृद्ध मछली जैव विविधता पर प्रकाश डालते हुए पूर्वोत्तर क्षेत्र में आईसीएआर-सिफरी के शोध और आउटरीच कार्य पर विस्तार से बताया। उन्होंने स्कूलों को एक्वेरियम मछली पालन के पारिस्थितिक और मनोवैज्ञानिक लाभों के बारे में छात्रों को शिक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण चयनित विद्यालयों को सहायक उपकरण और जीवित सजावटी मछलियों सहित एक्वेरियम का वितरण था। यह पहल छात्रों को सजावटी मछली पालन का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करेगी। डॉ. यादव और डॉ. बोराह के नेतृत्व में तकनीकी सत्र में एक्वेरियम सेटअप और मछली की देखभाल पर व्यावहारिक प्रदर्शन शामिल थे। सत्र को अच्छी प्रतिक्रिया मिली, जिसमें सजावटी मछली पालन प्रथाओं के बारे में बहुमूल्य जानकारी दी गई। इस अवसर पर प्रतिभागियों के साथ "सजावटी मछली पालन और एक्वेरियम में इसके रखरखाव" पर एक निर्देश पुस्तिका साझा की गई। धन्यवाद ज्ञापन देते हुए, डॉ. यादव ने स्कूलों की सक्रिय भागीदारी और राज्य मत्स्य विभाग के समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने जागरूकता को बढ़ावा देने, कौशल विकसित करने और जिम्मेदार सजावटी मछली पालन के माध्यम से भविष्य की आजीविका के अवसर पैदा करने के लिए आईसीएआर-सिफरी की प्रतिबद्धता को दोहराया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- बिगडाटा एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म के तहत, भारत में नई मछली प्रजातियों की खोज दर का आकलन किया गया है और 1999 से 2024 की अवधि के लिए 19 नई प्रजातियां / वर्ष दर्ज की गई है। अधिकतम खोज उत्तर-पूर्वी भारत से हुई है, 8 नई प्रजातियां / वर्ष।

- कवक सैप्रोलेग्निया पैरासिटिका की पहचान सैप्रोलेग्नियासिस के प्रेरक एजेंट के रूप में की गई है, जो सर्दियों के महीनों में पिंजरे की खेती में पंगेसियस की महत्वपूर्ण मृत्यु का कारण बनता है। इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोपिक अध्ययन ने कवक की विषैली प्रकृति का संकेत देते हुए कवक सिस्ट की सतह पर टर्मिनल हुक के साथ लंबे बालों की उपस्थिति की पहचान की। कवक 20oC के तापमान पर सबसे अच्छा बढ़ता है जो पानी के तापमान के साथ ओवरलैप होता है, जिससे सर्दियों में सैप्रोलेग्नियासिस के प्रकोप में तापमान-संचालित रोगाणु वृद्धि एक प्रमुख योगदानकर्ता के रूप में स्थापित होती है।

- अप्रैल 2025 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से 12.068 टन मछली पकड़े जाने का अनुमान है। पिछले वर्ष इसी महीने की तुलना में मछली पकड़ में लगभग 15.21% की कमी आई है।

- एनएमसीजी के 'राष्ट्रीय पशुपालन मिशन-III' के तहत उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल में नदी के विभिन्न तटों पर गंगा नदी में स्वदेशी गंगा भारतीय मेजर कार्प के 8.21 लाख फिंगरलिंग और 2.25 लाख विशाल नदी झींगे (मैक्रोब्रैकियम रोसेनबर्गी) छोड़े गए।

शोक संदेश

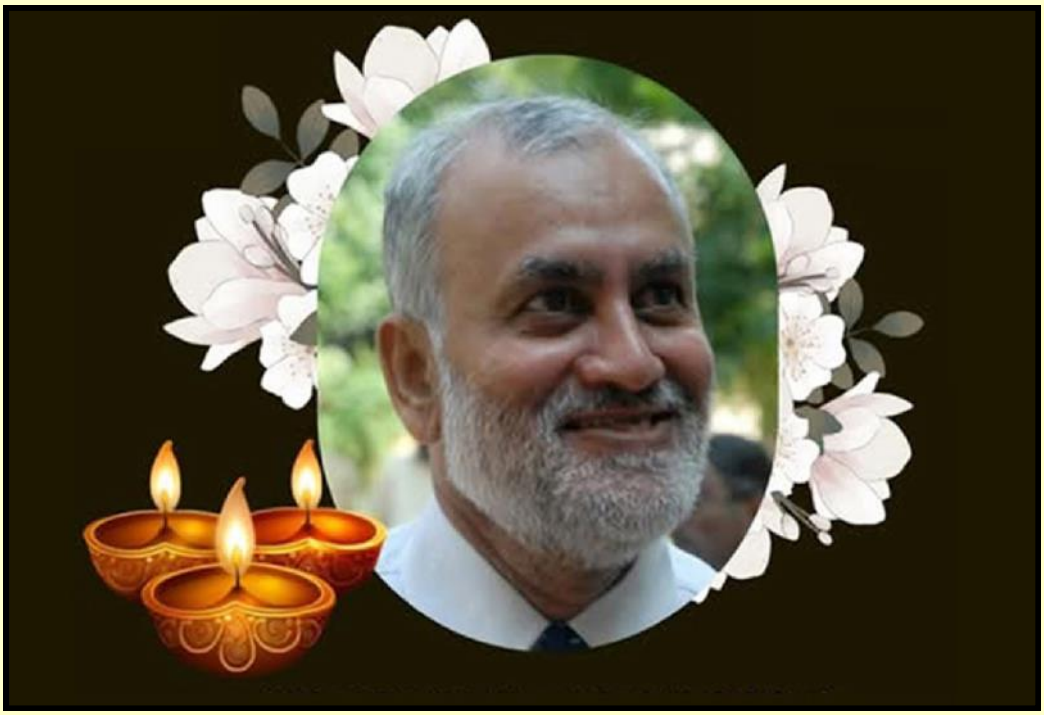

सिफरी परिवार के सभी सदस्य पद्मश्री डॉ. एस. अय्यप्पन (10/12/1955-10/5/2025) आईसीएआर के पूर्व महानिदेशक (2010-2016) और डेयर के सचिव के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते है। उनके दूरदर्शी नेतृत्व और भारतीय कृषि एवं पशुपालन क्षेत्र में बदलाव लाने में उनके उल्लेखनीय योगदान से भावी पीढ़ी को प्रेरणा मिलती रहेगी।

उनकी आत्मा को शांति मिले

Ecological Health Assessment and Biodiversity Conservation Survey of Mundeswari River

Kolkata,(KCN): The ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI), Barrackpore, has initiated an ecological and biodiversity evaluation program in the Mundeswari River under the basin-based approach of the National Mission for Clean Ganga (NMCG). The Mundeswari, a small western distributary of the Damodar River in West Bengal, plays a vital role in the region's hydrology and supports agricultural irrigation. In recent years, the Mundeswari has been severely affected by siltation, resulting in the formation of widespread sandbars and a significant reduction in fishing activity. However, areas such as Bakshi Ghat, Kuliya, Natibpur, and Harinkhola still support limited fisheries due to relatively better water flow. In Harinkhola, favourable ecological conditionssuch as greater depth, higher water transparency, elevated dissolved oxygen levels, and conservation initiative, CIFRI is also assessing the socio-economic status of fishers and conducting mass awareness campaigns to promote sustainable fishing and ecological preservation. Local communities recall that just 15 years ago, the river supported thriving populations of Hilsa and other commercially important species. However, altered hydrology, excessive sedimentation, and ecological degradation have led to a sharp decline in fish biodiversity. With MSP rate as Rs 5,650.00 Of late, Jute-ICARE has [illegible] mechanisms, spatial allowing for accurate visualisation

हिन्दुस्तान www.livehindustan.com

जिले में चौर मात्स्यिकी के विकास के लिए चौर क्षेत्र का भ्रमण करने पहुंची टीम

चंवरों की जमीन में तालाब बना मछली पालन को मिलेगा बढ़ावा

- चौर भूमि की अधिकता को देखते हुए तैयार करेगी चौर मात्स्यिकी विकास कार्य परियोजना
- मछली उत्पादन के क्षेत्र में रोजगार सृजित कर मछली पालकों को बनाया जायेगा आत्मनिर्भर

खास

सीवान, हिन्दुस्तान संवाददाता। राज्य के सीवान जिले में चौर क्षेत्र के बढ़ते महत्व को देखते हुए राज्य सरकार के [illegible] स्वीकार है। इसके अंतर्गत फिलहाल में सिर्फ सीवान जिले में चयन चंवर क्षेत्र के लिए [illegible] है। बताया जा रहा कि केन्द्र सरकार चंवर विकास योजना के तहत सीवान जिले के चंवरों का चयन की है। इसका उद्देश्य जिले में बेकार पड़ी चंवरों की जमीन में तालाब बनाकर मछली पालन को बढ़ावा देना व चंवर क्षेत्र की बेकार पड़ी जमीनों को उपयोगी बनाना है। इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए जिले में चंवर क्षेत्र को विकसित करने की योजना पर कार्य किया जा रहा है। मछली उत्पादन के क्षेत्र में रोजगार सृजित कर मछली पालकों को आत्मनिर्भर बनाने के अवसर तलाशे जा रहे हैं। योजना के सफल होने से जहां सीवान जिला मत्स्य उत्पादन में

दूसरा चौर का जिला मत्स्य पदाधिकारी के साथ निरीक्षण करती टीम।

भगवानपुर में चंवरों की जमीन का केन्द्रीय टीम ने किया निरीक्षण

भगवानपुर प्रखंड की प्रखंड की बेकार पड़ी चंवरों की भूमि में तालाब बना मछली पालन कर उपयोगी बनाने को लेकर केन्द्रीय टीम ने चंवर मत्स्कीय विकास योजना के तहत बुधवार को विभिन्न चंवरों का निरीक्षण किया। टीम के सदस्यों ने प्रखंड क्षेत्र के महम्मदपुर चंवर, कोंडिया चंवर, नगवां चंवर तथा बहियारा चंवर का निरीक्षण किया।

वैज्ञानिकों ने महम्मदपुर व बहियारा चंवरों में बनाए गए तालाबों का निरीक्षण कर पानी व मिट्टी की जांच की। मछली पालन कर रहे किसानों ने मत्स्य उत्पादन और बिक्री में आने वाली समस्या की साझा किया। मौके पर मत्स्य प्रसार पदाधिकारी अमरजीत कुमार, मत्स्य विकास पदाधिकारी अभिजीत कुमार व अन्य लोग थे।

प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अर्चन कुमार दास ने बताया कि केन्द्र सरकार ने बिहार राज्य के सीवान में अल्पाधिक चंवर भूमि होने के कारण चंवर मत्स्कीय विकास के लिए कार्ययोजना तैयार कर रही है। इसका मुख्य उद्देश्य अविकसित एवं बेकार पड़ी चंवर की निजी भूमि को विकसित कर मछली पालन योग्य बनाना है।

अतिरिक्त रोजगार के अवसर भी मछली पालन के साथ-साथ कृषि उत्पादन व उत्पादकता में भी वृद्धि की

Mayapur River Ranching: Sustai[illegible] Livelihoods and Biodiversity

Kolkata,(KCN): In accordance with the National Ranching Mission III, ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute in Barrackpore executed a river ranching initiative under the National Mission for Clean Ganga (NMCG) at PrabhupadaGhat, Mayapur, West Bengal, on 16 May 2025, marking a substantial advancement in sustainable fisheries and the conservation of riverine biodiversity. The primary aim of river ranching is to restore the diminished fish populations of the river, augment fisheries resources for local communities, and foster ecological equilibrium in the Ganga river system. This initiative corresponds with ICAR-CIFRI's continuous objective to guarantee the sustainable management of inland open waters. As of present, ICAR-CIFRI has distributed about 162 lakhs fish fingerlings of Indian Major Carps (Rohu, Catla, and Mrigal) at various locations nationwide. This extensive fingerling discharge is part of other equivalent initiatives occurring along different segments of the river to foster sustainable fishing. The event marked the release of 2.54 lakh fingerlings of Indian Major Carps into the river Ganga. The program was graced by Shree NandanPrabhuji, representative from ISKCON, Mayapur, and alsoattended by 26 local fishers including women fishers, who actively participated in the ranching activities. The initiative was led byDr.Basanta Kumar Das, Director of ICAR-CIFRI and PI of the NMCG project, along with Dr.MiteshRamteke, Dr.Canciyal Johnson, and other dedicated members of the NMCG project team. Alongside the ranching event, an awareness initiative was implemented to educate the local fishing community on the significa[illegible] preservi[illegible] Dolphin, [illegible] fish spec[illegible] was [illegible] safeguard[illegible] species a[illegible] unsustai[illegible] technique[illegible] the integri[illegible] ecosysten[illegible] highligh[illegible] detrimen[illegible] unsustain[illegible] overfishin[illegible] on the G[illegible] environm[illegible] were en[illegible] implemen[illegible] fishing t[illegible] detrimen[illegible] and adhe[illegible] season [illegible] prohibitio[illegible] natural br[illegible] These init[illegible] sustain th[illegible] fishers bu[illegible] the objectiv[illegible] restorati[illegible] biodiversi[illegible] ICAR-C[illegible] crucial in [illegible] of fish p[illegible] scientific [illegible] and [illegible] involveme[illegible]

मिर्जापुर के गंगा नदी में सिफरी ने मछलियों को छोड़ा

गंगा नदी में विलुप्त हो रहे मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए भाकृअनुप–केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा दिनांक 13 मई 2025 को मिर्जापुर घाट पर गंगा नदी में 10000 (दस हजार) भारतीय प्रमुख कार्प–कतला, रोहू, मृगल मछलियों के बीज को छोड़ा गया,राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन एम सी जी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के केन्द्राध्यक्ष डा० डी एन झा ने उपस्थित लोगों को नमामि गंगे परियोजना के बारे में जानकारी दी जिसके अन्तर्गत गंगा नदी और इसकी सहायक नदियों में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के बीज का रैंचिंग होना रखा है साथ ही लोगो को गंगा के जैव विविधता और स्वच्छता के बारे में जागरूक करना है,कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री देवराम जी संयोजक नमामि गंगे मिर्जापुर ने समारोह को सम्बोधित करते हुए गंगा और इसके मछली के महत्व को बताया,कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि श्री शशिधर साहू (पार्षद पति) मिर्जापुर ने गंगा के महत्व को बताया,उन्होने गंगा को स्वच्छ रखने एवम जैव विविधता को बचाने के लिए उपस्थित लोगों से आह्वान किया, श्री राजेश शर्मा संयोजक गंगा विचार मंच, (राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन नमामि गंगे जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार) ने नमामि गंगे के अंतर्गत सभी को गंगा को स्वच्छ रखने का शपथ दिलवाया,इस अवसर पर गंगा स्नान करने आये स्नानार्थियों और मछुआरों ने भी सभा में अपनी बातों को रखा और सभी ने गंगा के प्रति जागरूक होने के साथ ही गंगा को स्वच्छ रखने का संकल्प व्यक्त किया,कार्यक्रम में गंगा विचार मंच, माँ गंगा सेवा समिति के पदाधिकारी के साथ साथ आस–पास गाव के मत्स्य पालक, मत्स्य व्यवसायी तथा गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लागों ने भाग लिया,कार्यक्रम के अन्त में संस्थान के वैज्ञानिक डा० वेंकटेश ठाकुर ने धन्यवाद दिया और कहा कि हम परियोजना के उद्देष्यों को पाने में सफलता प्राप्त करेंगे,संस्थान के अन्य वैज्ञानिक श्री जितेंद्र कुमार श्री जितेंद्र कुमार सिंह श्री राम सजीवन श्री नंदन कुमार श्री संदीप कुमार श्री विकास गुप्ता श्री शिवेष पांडे श्री विक्रम सिंह आदि मौजूद रहे ।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरक्पुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है